ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को श्रावणी पर्व रक्षा-बन्धन एवं 67वें स्वतन्त्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 37, अंक 33 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 4 अगस्त, 2014 से रविवार 10 अगस्त, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 190 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

67वें स्वाधीनता दिवस (15 अगस्त) पर विशेष

स्वतन्त्रता के संवाहक महर्षि दयानन्द सरस्वती

संसार के गतिमान रंगमंच पर यदाकदा ऐसे महामानव प्रकट होते हैं कि जिनके गुण-गौरव और विशाल व्यक्तित्त्व का वर्णन करने के लिए शब्दों की भाव योजना बहुत छोटी रह जाती है। काल के कपाल पर छोड़े गए उनके पद चिह्न समय के साथ धूमिल न होकर अधिकाधिक चमकदार होकर प्रकट होते हैं। ऐसे युग-पुरुषों में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और योगिराज श्रीकृष्ण के बाद महर्षि देव दयानन्द सरस्वती का नाम आता है। मानव-जाति पर उनके असीम उपकारों के बारे में यही कहा जा सकता है कि व्यक्ति से लेकर विश्व स्तर तक और जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त जितनी भी समस्याएँ हो सकती हैं, मानव जीवन से सम्बन्धित जितने भी प्रश्न हो सकते हैं, उन सबका सर्वथा उचित समाधान दिया है महर्षि दयानन्द ने। अखण्ड ब्रह्मचर्य से युक्त अपरिमित शारीरिक बल के साथ विद्या, तप एवं तेज से देदीप्यमान ऋषि दयानन्द गौतम, कपिल, कणाद और पतञ्जलि के आद्य प्रतिनिधि थे। महाकवि निराला के अनुसार मानव की सभी क्षमताओं का सम्पूर्ण विकास दयानन्द में दृष्टिगोचर होता था। क्या नहीं दिया उसने मानव जाति के लिए? मनुष्य के निर्माण की शास्त्रोक्त और विज्ञान सम्मत संस्कार शृंखला का परिशोधन, धर्म के नाम पर व्याप्त अंधविश्वास और पाखण्डवाद का तार्किक खण्डन करके सत्यधर्म को पुन: प्रतिष्ठा, पारिवारिक मर्यादाओं और सामाजिक न्याय पर आधारित सद्भाव की स्थापना, जन्मना जातिवाद के स्थान पर गुण, कर्म पर आधारित वर्ण-व्यवस्था का प्रचलन, राज व्यवस्था की बात हो या राजा-प्रजा के पारस्परिक कर्त्तव्यों का ज्ञान, सैन्य संचालन हो या अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का निर्धारण, कहीं भी, किसी भी क्षेत्र में दयानन्द हमारा मार्गदर्शन करता हुआ मिल जाएगा। नारी की शिक्षा और उसको सामाजिक सम्मान दिलाने के लिए दयानन्द ने जो क्रांतिकारी विचार दिए, उनकी तुलना हजारों वर्षों के इतिहास में किसी से नहीं की जा सकती। धर्म को तर्क और विज्ञान की कसौटी पर परखने और विज्ञान को धर्म की संवेदनाओं से जोड़ने का विचार देकर महर्षि ने धर्म और विज्ञान को एक-दूसरे का पूरक बना दिया।

महर्षि के व्यक्तित्त्व की विराटता और कृतित्त्व की विशालता के क्षितिज का आंकलन करना मानवीय क्षमता से बाहर की बात है। महर्षि के व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व पर विहंगम दृष्टि डालने पर जब दृष्टि बौनी रह जाती है, तो मन में एक प्रश्न होता है कि चतुर्दिक् अंधकार के उस युग में एक मनुष्य इतने महान् कार्य कैसे कर गया? इतनी उदात्त प्रतिभा और उन्मुक्त सामर्थ्य उसने कहाँ से प्राप्त कर ली? ज्ञान के पावन प्रकाश की प्रखर प्रभा कहाँ से मिली उसे? इन सब प्रश्नों का एकमात्र उत्तर है- ईश्वर और उसका दिव्य ज्ञान वेद। ज्ञान-विज्ञान का मूल स्रोत सर्वज्ञ ईश्वर का दिया हुआ वेद ज्ञान था। इन दोनों के आश्रय के बिना कोई भी मनुष्य इतने महान् कार्य नहीं कर सकता। महर्षि ऐसे पहले महामानव थे, जिन्होंने वेदों को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक कहा ही नहीं, सिद्ध भी किया। जो पाश्चात्य विद्वान् वेदों को गडरियों के गीत कहा करते थे, महर्षि के भाष्य के बाद उन्हें वेदों में ज्ञान-विज्ञान के नवीन तत्त्व दिखने लगे।

महर्षि दयानन्द ने इतने व्यापक क्षेत्रों में कार्य किया है कि जब हम किसी क्षेत्र विशेषज्ञ का मूल्यांकन करते हैं, तो अन्य कई क्षेत्र हमारी आँखों से ओझल ही रह जाते हैं। राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए उनके महान् योगदान पर अभी हमारी दृष्टि नहीं पड़ी है। प्राय: विश्व उनको एक धार्मिक महापुरुष के रूप में जानता है। सच यह है कि स्वामी जी स्वतंत्र विचारक थे, किसी परम्परा और पूर्वाग्रह से बंधे रहना उन्हें स्वीकार न था। वेदों के प्रति उनकी निष्ठा और भक्ति इसी कारण थी कि वेद मानव की स्वतंत्र-चिंतन शक्ति के द्वारों को खोलकर उसे एक अनंत आकाश प्रदान करते हैं। वेद से स्वतंत्र-चिंतन शक्ति पाने वाला उदारचेता दयानन्द अपनी मातृभूमि को पराधीन में जकड़ी देखकर चुप रहे, यह सम्भव न था। 1857 की क्रांति को दबाकर अंग्रेज सरकार ने भारतीय जन मानस के धार्मिक घावों पर मरहम लगाने के लिए एक घोषणा की थी। महारानी विक्टोरिया ने कहा था- **"हम चेतावनी देते हैं कि यदि किसी ने हमारी प्रजा के धार्मिक विश्वासों पर, पूजा पद्धति में हस्तक्षेप किया तो उसे हमारे तीव्र कोप का शिकार होना पड़ेगा।"** इस लोक लुभावनी घोषणा के अंतर्निहित भावों को समझ कर उसका प्रतिकार करते हुए ऋषि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में घोषणा करते हैं- **"मतमतान्तरों के आग्रह से रहित, अपने-पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज पूर्ण सुखदायक नहीं है।"** जीवन के हर क्षेत्र में स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति देने वाले संन्यासी द्वारा देश की स्वतंत्रता का यह शंखनाद ही आगे चलकर भारत के जन-मन में गूँजने लगा। स्वाधीनता के इतिहास में जितने भी आंदोलन हुए उनके बीज स्वामी जी अपने अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के माध्यम से डाल दिए थे। गांधी जी के 'नमक आन्दोलन' के बीज महर्षि

- शेष पृष्ठ 4 पर

आओ! स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर देश को समृद्ध एवं खुशहाल बनाने में अपने योगदान का संकल्प लें

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली सभा एवं कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन के अन्तर्गत

राष्ट्र समृद्धि यज्ञ एवं महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद अनुसन्धान केन्द्र का शिलान्यास

शुक्रवार 15 अगस्त, 2014	प्रात: 10 से 1 बजे	स्थान: ग्राम ककोड़, कोझीकोड (कालीकट)

संस्कार एवं साधना चैनल पर सीधा प्रसारण

पहुंचने वाले कृपया अपने नाम एवं मो. नं. किसी भी कार्यदिवस में दोपहर 12 से 6 बजे के मध्य श्री एस. पी. सिंह जी को मोबाइल नं. 9540040324 पर अंकित करा दें ताकि समुचित व्यवस्था की जा सके।

दिल्ली आ. प्र. सभा के तत्त्वावधान में आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट सहयोग से संचालित

गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम् का वार्षिकोत्सव एवं गुरुवर विरजानन्द दण्डी दिवस समारोह

रविवार 21 सितम्बर 2014	आर्यसमाज आनन्द विहार एल ब्लाक, हरि नगर, नई दिल्ली

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं एवं संस्कृतकुलम् के ब्रह्मचारियों को अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

ब्र. राजसिंह आर्य	विनय आर्य	वीरेन्द्र मल्होत्रा	महेन्द्र सिंह आर्य	सुधा गुप्ता
प्रधान	महामन्त्री	प्रधान	मन्त्री	प्रधान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा		आर्यसमाज आ.वि. एल ब्लाक		गु.वि. सं.कु.

वेद-स्वाध्याय

पृथिवी का भ्रमण

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।। ऋ. 10/189/1

अर्थ—(**अयम् गौः**) यह भूमि (**पृश्निः**) आकाश में (**आ अक्रमीत्**) भ्रमण करती है। (**मातरम्**) अपने उत्पत्ति स्थान जल को (**पुरः असदत्**) साथ लिये विराजती है और (**पितरम्**) पिता रूप (**स्वः**) सूर्य के चारों ओर (**प्रयन्**) परिक्रमा करती है।

मन्त्र में पृथिवी का भ्रमण, जल से उसकी उत्पत्ति और सूर्य के चारों ओर चक्र लगाना बतलाया है जिनका क्रमशः वर्णन करना उचित होगा।

१. आयं गौः पृश्निरक्रमीत् यह भूमि आकाश में भ्रमण करती है। कोई भी पदार्थ शून्य आकाश में गति के बिना स्थिर नहीं रह सकता। गौः पृथिवी का वाचक है **गच्छतीति गौः** जो गतिशील है उसे गौः कहते हैं। यह शब्द ही बता रहा है कि पृथिवी गतिशील है।

वार्षिक गति और दैनिक गति, ये सूर्य की दो गतियाँ हैं। पृथिवी एक वर्ष में सूर्य के चारों ओर अपना एक चक्र पूरा कर लेती है। यह अपने अक्ष पर २३१/२ अंश झुकी हुई है जिसके कारण ऋतुयें बनती हैं। इन ऋतुओं के कारण ही नानाविध अन्न, फल, शाक, सब्जियाँ और ओषधि-वनस्पतियाँ उत्पन्न होती हैं।

इसी भाँति पृथ्वी अपनी कीली पर चौबीस घण्टों में एक चक्र पूरा करती है, इससे दिन-रात का निर्माण होता है। गोल होने के कारण जो भाग सूर्य के सामने होता है वहाँ दिन और पृष्ठ भाग में रात्रि होती है।

अब प्रश्न उठता है कि किस कारण से पृथिवी सूर्य के चारों ओर तथा अपनी कीली पर घूमती है। आज के विज्ञान के पास इसका कोई समुचित उत्तर नहीं है। वे कहते हैं कि जैसे परमाणु में इलैक्ट्रोन, प्रोटोन, न्यूट्रोन होते हैं। प्रोटोन धनावेश और इलैक्ट्रोन ऋणावेश वाला है। न्यूट्रोन निष्क्रिय है। न्यूट्रोन और प्रोटोन केन्द्र में रहते हैं और इलैक्ट्रोन उसके चारों ओर चक्र लगा रहे हैं। एक परमाणु सौर मण्डल का ही मानचित्र प्रस्तुत कर रहा है। इसी भाँति बहुत पहले नेबुला [हिरण्यगर्भ] में विस्फोट हुआ और उससे सूर्य, नक्षत्रादि की उत्पत्ति हुई। विस्फोट होने से जो द्रव्य उछला वह चारों ओर फैल गया और अब भी गतिशील है। कालान्तर में सूर्य से पृथिवी अलग हुई। उसका द्रव्य भी गतिशील था। परन्तु सूर्य की आकर्षण-शक्ति ने उसे अपनी ओर आकर्षित किये रखा जिसके परिणामस्वरूप यह सूर्य के चारों ओर भ्रमण कर रही है। अपनी कीली पर घूमने का कारण वे बल और प्रतिबल को बता रहे हैं। उनकी यह कल्पना पूर्णतः सत्य नहीं है। क्योंकि बिना किसी चेतन सत्ता के एक निश्चित दूरी पर रहकर पृथिवी का अपनी कक्षा में एक ही गति से घूमना समझ से बाहर का विषय है। क्या सूर्य से पृथक् होते समय पृथिवी की घूमने की जो गति थी उसमें अब कमी आई है अथवा एक ही गति से वह घूम रही है। यदि एक ही गति से घूम रही है तो उसके पीछे कोई अदृश्य शक्ति काम कर रही है। यदि उसके वेग में कमी आई है तो इसके मापदण्ड का साधन क्या है और क्या एक दिन ऐसा भी आयेगा कि इसकी गति मन्द हो जायेगी या रुक जायेगी तब इसकी स्थिति क्या होगी। यदि यह कहा जाये कि भौतिक शास्त्र के नियम से इसकी उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय भी होती है तो उस नियामक शक्ति का नाम क्या है। विज्ञान के पास इसका कोई सन्तोषप्रद समाधान नहीं है।

वेद कहता है—**स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमाम्** (यजुः० १३.४) जो सूर्यादि और पृथिवी को धारण कर रहा है। सूत्रात्मा जो वायु है उसके आधार और आकर्षण से सब लोकों का धारण और भ्रमण होता है तथा परमात्मा अपने सामर्थ्य से पृथिवी और अन्य लोकों का धारण, भ्रामण और पालन कर रहा है।

सूर्य भी अपनी कक्षा में भ्रमण कर रहा है क्योंकि बिना गति किये उसका भी स्थिर रहना सम्भव नहीं है। ऐसा ही सर्वत्र जानना चाहिये।

२. असदन् मातरं पुरः पृथिवी अपने उत्पत्ति स्थान जल को साथ लिये घूमती है। प्रश्न उठता है कि पृथिवी के गोल होने और गतिशील रहने के कारण जल बह क्यों नहीं जाता। इसे जानने के लिये किसी लोटे को जल से भर उसकी ग्रीवा में डोरी बान्ध कर यदि उसे गोलाकार घुमायें तो उसका जल नीचे नहीं गिरता क्योंकि वायु का दबाव उसे थामे रखता है। गतिशीलता के कारण यह दबाव बढ़ जाता है। इसी भाँति पृथिवी के चारों ओर वायु की घनी परत है जो जल को बिखरने नहीं देती। पृथिवी की उत्पत्ति जल से हुई है। प्रारम्भ में पृथिवी का द्रव्य पिलपिला जैसा था। कालान्तर में वह ठण्डा हुआ और दूध जैसी पपड़ी आकर वह कठोर होती चली गई और जल-वाष्प ठण्डे हो वर्षा करने लगे जिससे समुद्र बने। दर्शनों की मान्यता के अनुसार पृथिवी और जल के द्व्यणुक मिल पृथिवी का निर्माण हुआ। साठ परमाणुओं का एक अणु होता है, दो अणु का एक द्व्यणुक जो स्थूल वायु है, तीन द्व्यणुक का अग्नि, चार द्व्यणुक का जल और पाँच द्व्यणुक की पृथिवी। इसी प्रकार क्रमशः मिलाकर सभी भूगोलादि परमात्मा ने बनाये हैं। (स०प्रकाश ८ समु.)

३. पितरं च प्रयन्त्स्वः पृथिवी अपने पालक=पिता सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करती है। **उक्षा दाधार पृथिवीमुत द्याम्** (ऋ० १०.३१.८) वर्षा के द्वारा पृथिवी का सेचन करने से उक्षा सूर्य का नाम है। उसने अपने आकर्षण से पृथिवी को धारण किया है। परन्तु सूर्यादि का धारण करने वाला बिना परमेश्वर के दूसरा कोई भी नहीं है। यदि कोई कहे कि ये सब लोक परस्पर आकर्षण से धारण होंगे पुनः परमेश्वर के धारण करने की क्या अपेक्षा है? इसका उत्तर यह है कि ये सभी लोक-लोकान्तर आकार वाले हैं और आकार वाला पदार्थ अनन्त कभी नहीं हो सकता। जहाँ उनकी सीमा या अवधि समाप्त होती है, वहाँ पर ये लोक किसके आकर्षण से धारण होंगे। इसलिये यही मानना उचित है समस्त जगत् के धारण और आकर्षण का कर्त्ता बिना परमेश्वर के दूसरा कोई भी नहीं है।

- क्रमशः

सेवक चाहिए

आर्यसमाज केशव पुरम्, दिल्ली-35 को एक सेवक की आवश्यकता है। इच्छुक व्यक्ति मो. 9971823677 पर सम्पर्क करें। आपसी बातचीत के पश्चात् आवास आदि सुविधा, मानदेय तथा समाज क कार्यों से सम्बन्धित निर्णय लिया जाएगा।

- मनवीर सिंह राणा, मन्त्री

आवश्यकता है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को विभिन्न विषयों पर लेख लिखने एवं सम्पादन कार्य में रूचि रखने वाले आर्य युवा लेखकों की आवश्यकता है। गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त विद्वानों को प्राथमिकता दी जाएगी। इच्छुक महानुभाव अपने बायोडाटा ईमेल/डाक द्वारा भेजें।

महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15- हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
ईमेल : aryasabha@yahoo.com

आर्यसमाज के गीतों को बनाएं अपनी मोबाइल ट्यून (CallerTunes)

आर्यसमाज के गीतों को अपनी मोबाइल ट्यून बनाने के लिए आज ही डाउनलोड करें और अन्य महानुभावों को भी प्रेरित करें

Sr. No.	Song Title	Voda	Idea	Airtel	Tata CDMA	Tata Doco	BSNL (North)	MTS	Uninor	Tata Indicome
1	आई फौज दयानन्द वाली	10444132	720080	543211007382	376609	254930	173340	77772509	0387407	1242047
2	ये प्रभु हम तुम से	10444133	720084	543211007383	376614	254931	173341	77772510	0387408	1242048
3	होता है सारे देश का	10444134	720081	543211007384	376615	254932	173342	77772511	0387409	1242049
4	हम को सब दुनिया जाने	10444135	720082	543211007385	376616	254933	173343		0387410	1242050
5	जो होली सो होली	10444136	720090	543211007386	376622	254934	173344	77772512	0387411	1242051
6	पूजनीय प्रभु हमारे	10444137	720105	543211007387	376629	255260	173345	77772513	0387412	1242052
7	सुनो-सुनो ये दुनिया वालो	10444138	720115	543211007388	376639	254935	173346	77772514	0387413	1242053
8	यूँ तो कितने ही महापुरुष	10444139	720111	543211007389	376644	254936	173347	77772515	0387414	1242054
दिल्ली चलो (सम्मेलन गीत)				543211462723			1721306			

यदि आप इन गीतों में से किसी एक धुन को अपनी मोबाइल ट्यून बनाना चाहते हैं अपने मोबाइल से निम्न प्रकार लिखकर मैसेज करें

Voda- type “CT code”send sms to 56789
Airtel- Dial Code and Say “ YES”
Tata docomo- type “CT code” send sms to 543211
MTS- type “CT code” send sms to 55777
TATA Indicom - type "WT code" send sms to 12800
Idea- type “DT Code”send sms to 55456
Tata cdma- type “Wt code” send sms to 12800
BSNL- type “BT code” send sms to 56700
UNINOR - type "CT code" send sms to 51234

उदाहरण के तौर पर आपके पास Idea का कनेक्शन है और आप "Aai Fauj Dayaanand Wali" गीत की धुन अपने Idea मोबाईल पर कॉलर ट्यून बनाना चाहते हैं, तो आप अपने आइडिया फोन से टाइप करें "DT 720080" और 55456 पर SMS कर दें।

95वें जन्मदिवस : भाद्र कृ. 2 (12 अगस्त) पर विशेष लेख

ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त व सब आर्यों के अनुकरणीय श्रद्धेय लाला दीपचन्द आर्य

चंचला लक्ष्मी को यशस्वनी रूप देकर वेद प्रचारकों में बनाया अमर स्थान

– मनमोहन कुमार आर्य

लाला दीपचन्द आर्य, आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द को सर्वात्मना समर्पित वैदिक धर्म के अनुयायी थे। आप केवल वाणी या शब्दों के ही धनी नहीं थे अपितु अपने पुरुषार्थ से अर्जित अपनी पूंजी का बहुत बड़ा भाग ईश्वर की वेदाज्ञा व महर्षि दयानन्द के वेद प्रचार के कार्यों को पूर्ण करने में लगाया था। आज का युग आधुनिक युग कहलाता है। आज यदि हमें किसी से यदि अपनी कोई अच्छी या गलत बात मनवानी है तो हमें तर्क व प्रमाणों का सहारा लेना होता है। हमारे तर्क व प्रमाणों को जब दूसरा व्यक्ति स्वीकार कर लेता है तभी हमारा उद्देश्य पूरा होता है। इसके लिए हम व्याख्यान या उपदेश का सहारा ले सकते हैं। उपदेश का प्रभाव स्थाई या दूरगामी नहीं होता अपितु सामयिक या अल्पकालिक होता है। यदि हमें प्रचार का स्थाई कार्य करना है तो फिर हमें अपनी मान्यताओं को सत्य व तर्क की तुला पर तोलकर संक्षेप व सारगर्भित रूप से लेख, पुस्तक, ग्रन्थ, शास्त्र, पत्र, पत्रिका में लिखकर अज्ञानी, अल्पज्ञानी, जिज्ञासु, प्रतिपक्षी, स्वार्थी, विरोधी व कुपथगामियों को बतानी व उनमें प्रचारित करनी होगीं और उन्हें चुनौती देनी होगी कि वह हमारी मान्यताओं का खण्डन करें या उन्हें स्वीकार करें। महर्षि दयानन्द और उनसे पूर्व व पश्चात् के सभी ज्ञान व विद्वान यही कार्य कर रहें हैं। कुछ लोग तो अपने अज्ञान व सीमित ज्ञान की पूर्ति के लिए किसी धार्मिक या सामाजिक संस्था का गठन करते हैं परन्तु कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिनका विलुप्त स्वार्थ होता है और जो भोली-भाली धर्मभीरू व भावुक, अन्ध विश्वासी व पाखण्डी जनता को बरगलाते हैं। आजकल समाज में ऐसा ही देखा जा रहा है। बरसात में भूमि पर घास-फूस इसलिए उग जाती है कि उसकी निराई या गुड़ाई करने वाला वहां कोई नहीं होता यही स्थिति हमारे मत-मतान्तरों की सम्प्रति है। यदि वहां सत्य-ज्ञानी व विद्या व्यसनी विद्वान लोग न हों तो अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड, मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, सामाजिक भेदभाव, स्त्रियों व दुर्बलों के प्रति अत्याचार आदि उत्पन्न व प्रचलित हो जाते हैं। इन्हें दूर करने व रोकने के लिए सत्य का ज्ञान रखने वाले, ईश्वर भक्तों द्वारा वेदों का प्रचार आवश्यक है। महर्षि दयानन्द सरस्वती व उनके भक्त लाला दीपचन्द आर्य जी ने वेद व सत्य के प्रचार को ही अपने जीवन का मुख्य उद्देश्य बनाया और देश व विश्व के कल्याण में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

हम जब वेद प्रचार की बात करते हैं तो हमें यह ज्ञात होना चाहिए कि वेद क्या हैं? वेद ईश्वर द्वारा सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी जैविक सृष्टि में ईश्वर द्वारा उत्पन्न आदि चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को दिया गया मन्त्रों के रूप में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद का शब्द-अर्थ-सम्बन्ध सहित ज्ञान है जिसमें सब सत्य विद्याएं एवं आचार-विचार-व्यवहार की सार्वकालिक एवं उपयोगी शिक्षाएं हैं। हमें तो ऐसा भी अनुभव होता है कि देवनागरी की वर्णमाला का ज्ञान भी इन आदि व इनके बाद के कुछ व किन्हीं ऋषियों को ईश्वर की प्रेरणा द्वारा ही प्राप्त हुआ था जब उन्होंने वेदों के संरक्षण का ध्यानावस्थित होकर चिन्तन किया होगा। हमारे इस अनुमान पर वेदों के विद्वान आर्य जनता का मार्गदर्शन कर सकते हैं। वेदों में ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के सत्य स्वरूप का चित्रण हुआ है जो अन्यत्र विश्व के धार्मिक कहे जाने वाले साहित्य व ग्रन्थों से प्राप्त नहीं होता। इस ईश्वरीय ज्ञान वेद का पालन करना ही मनुष्य जीवन का उद्देश्य है जिससे मनुष्य जीवन, धर्म अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति करके सफल होता है। इसे अधिक समझने के लिए महर्षि दयानन्द रचित सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका तथा उनके वेदभाष्य आदि ग्रन्थों का अध्ययन, चिन्तन व मनन आवश्यक है। इसके साथ वैदिक व्याकरण, दर्शन, उपनिषद, मनुस्मृति सहित समस्त वैदिक साहित्य का अध्ययन करने से विशेष लाभ होता है। इनके अध्ययन से सबसे बड़ा लाभ जीवन के सत्य व यथार्थ उद्देश्य, उसकी प्राप्ति के साधनों एवं साध्य का ज्ञान होकर साध्य की प्राप्ति व सिद्धि होती है। अन्य मत-मतान्तरों में यह कदापि सम्भव नहीं है, ऐसा हमारा अध्ययन से ज्ञान व अनुभव बताता है। महाभारत काल के बाद से हमारे देश व संसार में अज्ञान फैला हुआ है जिसे वेदों के प्रचार से ही दूर किया जा सकता है। अपने जीवनकाल में लाला दीपचन्द आर्य आर्य समाज के सम्पर्क में आए और महर्षि दयानन्द के मानवता के कल्याण के मिशन को समझ कर उससे जुड़ गए उन्होंने आर्य समाज और वैदिक धर्म के मर्म को समझा और मानवता का कल्याण करने के लिए स्वयं को समर्पित किया। उन्होंने वेदों के प्रचार प्रसार के लिए अपनी प्रभूत स्वार्जित पूंजी को समर्पित कर आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट की सन् 1966 में स्थापना की जिसने वेद प्रचार के क्षेत्र में उल्लेखनीय ऐतिहासिक महत्त्व का कार्य किया है और उस चंचला-लक्ष्मी ने यशस्विनी रूप धारण कर अपने संरक्षक व स्वामी लाला दीपचन्द आर्य को इतिहास में अमर स्थान प्रदान कराया।

हरियाणा के गुड़गांव जिले के धारूहेड़ा ग्राम में भाद्र कृष्णा 2 सन् 1919 को आपका जन्म एक वैश्य परिवार में हुआ था। दिल्ली में साबुन उद्योग को आपने अपनी व्यावसायिक गतिविधियों को क्षेत्र बनाया और आशातीत सफलता प्राप्त की। दिल्ली में आपने पं. रामचन्द्र देहलवी सहित अनेक विद्वानों के प्रवचन सुनकर आर्य समाज के साहित्य को पढ़ा और आर्य समाज नया बांस दिल्ली के सदस्य बन गए। एक बार दिल्ली के खारीबावली क्षेत्र में एक पुस्तक विक्रेता द्वारा सस्ते मूल्य पर ईसाई मत की पुस्तकों को बेचते और बड़ी संख्या में लोगों को उन्हें खरीदते हुए देख कर आपने यह निष्कर्ष निकाला कि यदि साहित्य सस्ता हो तो जनता उसे खरीद कर पढ़ती है। आरम्भ में इस घटना से प्रेरित होकर आप अन्य प्रकाशकों से महर्षि दयानन्द के युगान्तरकारी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की बड़ी संख्या में प्रतियां खरीद कर उसे सस्ते मूल्य पर वितरित करने लगे। इससे आपकी संतुष्टि नहीं हुई और कुछ ही समय पश्चात् आपने अपनी स्वोपार्जित पूंजी से सन् 1966 में दिल्ली में "आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट" की स्थापना की। इस ट्रस्ट का उद्देश्य आर्ष साहित्य का अन्वेषण, उसकी रक्षा, सम्पादन, शुद्ध मुद्रण एवं प्रकाशन तथा लागत से भी कम मूल्य पर इसका पाठकों में वितरण निश्चित किया गया। इस दिशा में ट्रस्ट में अपूर्व सफलता प्राप्त की और एक नया इतिहास बनाया।

ट्रस्ट के प्रकाशनों में सत्यार्थ प्रकाश का प्रकाशन मुख्य है। यह प्रकाशन स्वामी दयानन्द के जीवन काल में प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय संस्करण को प्रमाणिक मानकर किया गया हैं। यह उल्लेखनीय है कि स्वामी दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा सत्यार्थ प्रकाश के अब तक 39 संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें पाठान्तरों की भरमार है। लाला दीपचन्द आर्य ने पहले सत्यार्थ प्रकाश एवं ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के स्वामी दयानन्द के समय व उनकी मृत्यु के कुछ ही समय पश्चात् प्रकाशित संस्करणों की फोटो प्रतियां छापीं और उसके पश्चात् उनसे मिलान कर आगामी शुद्ध संस्करणों के प्रकाशन की श्रंखला आरम्भ की जो अद्यावधि जारी है। आपके इस दूरदर्शिता पूर्ण कार्य से महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों का मूल स्वरूप शुद्ध व अक्षुण बना हुआ है। इस प्रकार से स्वामी दयानन्द की पुस्तकों के पाठों के संरक्षण का महत्वपूर्ण कार्य ट्रस्ट द्वारा सम्पादित किया गया है जिसके लिए सारा आर्य जगत व मानव जाति आपकी कृतज्ञ बन गई है। इन दो ग्रन्थों के अतिरिक्त संस्कार विधि, दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह, यजुर्वेद-भाष्य-भास्कर, ऋग्वेद-भाष्य-भास्कर के अनेक खण्ड, स्वामी दयानन्द का पं. लेखराम व पं. गोपाल राव हरि लिखित जीवन चरित, विस्तृत मनुस्मृति, विशुद्ध मनुस्मृति एवं वेदार्थ कल्पद्रुम आदि ग्रन्थों का ट्रस्ट द्वारा प्रकाशन कर एक आदर्श प्रस्तुत किया गया। महान ऋषि भक्त लाला दीपचन्द आर्य द्वारा स्थापित आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली ने अक्तूबर, 2013 तक ही सत्यार्थ प्रकाश के अनेक आकारों में 80 संस्करण प्रकाशित किए हैं। इनके अन्तर्गत प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश की प्रकाशित प्रतियों की कुल संख्या 11,63,650 है। यहां यह कहना भी उपयुक्त होगा कि लालाजी ने सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न आकारों में जो सुरूचिपूर्ण, नयनाभिराम, मनमोहक, आकर्षक, प्रभावशाली प्रकाशन किए व अत्यल्प मूल्य पर उनका प्रचार किया वह आर्य समाज के इतिहास की एक अन्य प्रमुख व अन्यतम घटना है जिससे उनका नाम व उनके पुत्र श्री धर्मपाल आर्य जी का नाम आर्य समाज के इतिहास में गौरव के साथ अंकित हो गया है। सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय संशोधित संस्करण का ट्रस्ट से इतर अनेक आर्य विभूतियों ने 23 भाषाओं में अनुवाद भी किया है जिससे देश व विदेश के बड़ी संख्या में लोग लाभान्वित हुए और इससे सर्वत्र हलचल पैदा हुई। इन सब कार्यों से विश्व के साहित्य में सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ ने अपना विशेष स्थान बना लिया। इस ग्रन्थ में सत्य, ज्ञान, युक्ति, तर्क व अनेक प्रमाणों सिद्ध व निश्चित जो धार्मिक, शैक्षिक, सामाजिक, राजनैतिक मान्यताएं दी गई हैं, उनकी विश्व के साहित्य में उपलब्ध किसी भी धर्म व अन्य ग्रन्थ से कोई तुलना नहीं है अर्थात् यह ग्रन्थ, कोई माने या न मानें, संसार का सर्वोत्तम धर्म ग्रन्थ है।

ट्रस्ट की गतिविधियों से जनता को सूचित

– शेष पृष्ठ 6 पर

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के संस्थापक एवं आर्ष साहित्य के प्रचार को अपने जीवन का संकल्प बनाने वाले लाला दीपचन्द जी

स्व. लाला दीपचन्द जी ने अपने व्यापार से प्राप्त धनराशि से आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट की स्थापना की, जिसका मुख्य उद्देश्य ऋषि दयानन्द कृत और आर्ष साहित्य को न्यूनतम मूल्य पर प्रकाशन करना तथा वितरण करना था। आपके ट्रस्ट ने अपने अल्प कार्यकाल में आर्यसमाज की बहुत बड़ी साहित्यिक सेवा की है तथा वर्तमान में भी कर रहा है। आपके सुपुत्र श्री वेदपाल जी, श्री सत्यपाल जी, श्री धर्मपाल आर्य जी (जो वर्तमान में ट्रस्ट के प्रधान एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान भी हैं) श्री ऋषिपाल जी एवं श्री यशपाल जी सभी आर्यसमाज के कार्यों में अनवरत लगे हुए हैं तथा आर्यसमाज के कार्यों में हर प्रकार की सेवा दे रहे हैं।

प्रथम पृष्ठ का शेष

ने तभी डाल दिए थे, जबकि गांधी जी मात्र 6 वर्ष के बालक थे। स्वामी जी सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं– **"नोंन के बिना दरिद्र का भी निर्वाह नहीं, किन्तु नोंन सबको आवश्यक है। वे मेहनत मजदूरी करके जैसे-तैसे निर्वाह करते हैं, उसके ऊपर भी नोंन का 'कर' दण्ड तुल्य ही है। इससे दरिद्रों को बड़ा क्लेश पहुँचता है, अतः लवण आदि के ऊपर 'कर' नहीं रहना चाहिए।"**

स्वदेशी आंदोलन के मूल सूत्रधार भी महर्षि दयानन्द ही थे। उन्होंने लिखा है –**"जब परदेशी हमारे देश में व्यापार करेंगे तो दारिद्र्य और दुःख के बिना दूसरा कुछ भी नहीं हो सकता।''** स्वदेशी भावना को प्रबलता से जगाते हुए ऋषि बड़े मार्मिक शब्दों में लिखते हैं–**''इतने से ही समझ लो कि अंग्रेज अपने देश के जूते का भी जितना मान करते हैं, उतना अन्य देश के मनुष्यों का भी नहीं करते।''** महर्षि की इसी स्वदेशी भावना का परिणाम था कि भारत में सबसे पहले सन् 1879 में आर्य समाज लाहौर के सदस्यों ने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का सामूहिक संकल्प लिया था, जिसका विवरण 14 अगस्त 1879 के 'स्टेट्समैन' अखबार में मिलता है। महर्षि दयानन्द के राष्ट्रीय विचारों के महत्व को अंग्रेज बहुत गहराई से अनुभव करते थे। सन् 1911 की जनगणना के अध्यक्ष मि. ब्लण्ट लिखते हैं– **''दयानन्द मात्र धार्मिक सुधारक नहीं था, वह एक महान् देशभक्त था। यह कहना अधिक ठीक होगा कि उसके लिए धार्मिक सुधार राष्ट्रीय सुधार का ही एक उपाय था।''** एक अन्य स्थान पर ये ही ब्लण्ट महोदय लिखते हैं– **"आर्यसमाज के सिद्धांतों में देशप्रेम की प्रेरणा है। आर्य सिद्धांत और आर्य शिक्षा समान रूप से भारत के प्राचीन गौरव के गीत गाते हैं। ऐसा करके वे अपने अनुयायियों में राष्ट्र के प्राचीन गौरव की भावना भरते हैं।"** ब्लण्ट महोदय के कथन की सत्यता ऋषि के कालजयी ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' को पढ़कर ही अनुभव की जा सकती है। वह ग्रंथ कितने क्रांतिकारियों का प्रेरणा स्रोत रहा है, यह बता पाना बहुत कठिन है। पं. रामप्रसाद बिस्मिल, वीर अशफाक उल्ला, दादाभाई नौरोजी, श्यामजी कृष्णवर्मा, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द, वीर शिरोमणि सावरकर आदि न जाने कितने बलिदानी सत्यार्थप्रकाश ने पैदा किये। एक अंग्रेज मि. शिरोल ने तो सत्यार्थप्रकाश को ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ें खोखली करने वाला लिखा था। ये तथ्य स्पष्ट करते हैं कि महर्षि दयानन्द स्वतंत्रता अभियान के प्रथम और प्रबल संवाहक थे। स्वराज्य और स्वतंत्रता की मूल अवधारणा हमें उन्हीं से प्राप्त हुई थी।

सांसारिक मोहमाया और अपने-पराये की भावना से बहुत आगे निकल चुका यह वीतराग संन्यासी फरुखाबाद में देर रात तक सो न सका। अचानक शिष्य लक्ष्मण की आँखें खुल गईं, वह थोड़ा व्याकुल होकर बोला–'महाराज! आप सोये नहीं, क्या कहीं पीड़ा है? कहो तो हाथ-पांव या सिर दबा दूँ। या कोई औषधि लाकर दूँ।'' स्वामी जी एक गहरी श्वांस छोड़ते हुए बोले– **''लक्ष्मण! यह वेदना औषधोपचार से ठीक होने वाली नहीं है। यह तो भारतीयों के सम्बन्ध में चिंता के कारण चित्त में उभरती है। मेरी अब यह इच्छा है कि राजा महाराजाओं को सन्मार्ग पर लाकर उनका सुधार करूँ। आर्य जाति को एक उद्देश्य रूपी सुदृढ़ सूत्र में बांधने की मेरी प्रबल इच्छा है।"** श्री मोहनलाल विष्णुलाल पाण्ड्या ने पूछा कि महाराज! भारत का पूर्ण हित कैसे हो सकता है? स्वामी जी ने कहा– **'एक धर्म, एक भाव और एक लक्ष्य बनाए बिना भारत का पूर्ण हित और उन्नति असम्भव है। सभी उन्नतियों का मूल एकता है।'** महर्षि के ये विचार आज की परिस्थितियों में भी उतने ही उपयोगी हैं। लगे हाथों यह भी देखते चलें कि महर्षि की दृष्टि में हमारी पराधीनता और दुर्गति के मूल कारण क्या हैं? अपने पराभव के कारणों को प्रकट करते हुए महर्षि लिखते हैं–

"आर्यावर्त्त में विदेशियों के राज होने का कारण है-आपस की फूट, ब्रह्मचर्य का नाश, विद्या पढ़ने-पढ़ाने का अभाव, विषयासक्ति आदि कुलक्षण।" ऋषिवर बड़े भावपूर्ण स्वर में हमें समझाते हैं –**"क्या महाभारत की बातें जो 5000 वर्ष पूर्व हुई थीं, भूल गए? देखो! आपस की फूट से कौरव-पाण्डवों तथा यादवों का सत्यानाश हो गया। अब तक भी यह फूट का महारोग आर्यों के पीछे लगा हुआ है- परमेश्वर कृपा करे कि हम आर्यों से यह राजरोग नष्ट हो जाए।''**

महर्षि दयानन्द के कार्यों और विचारों पर जब एक समग्र दृष्टि डालते हैं तो मि. ब्लण्ट का यह कथन साकार हो उठता है कि महर्षि के लिए धार्मिक सुधार राष्ट्रीय सुधार का एक उपाय था। मूलतः उनका हर कार्य राष्ट्र की स्वतंत्रता एवं सुख-समृद्धि के लिए ही था। देश की पराधीनता उन्हें कितनी चुभती थी, इस बात का पता इसी से चल जाता है कि वे वेद मंत्रों का भाष्य करते हुए भी ईश्वर से यह प्रार्थना करना नहीं भूलते थे कि हे जगदीश्वर! विदेशी शासक कभी हमारे ऊपर राज्य न करें। मूर्ति पूजा का खण्डन करते समय भी देश की एकता और अखण्डता ऋषि को याद रहती है, वे लिखते हैं कि अनेक प्रकार के रूप, नाम और चरित्र वाली मूर्तियों के पुजारी एकता को नष्ट कर विरोधी मत चलाकर आपस में फूट बढ़ाकर देश का नाश करते हैं। स्वामी जी आगे लिखते हैं–**"मूर्तियों के भरोसे शत्रु का पराजय और अपना विजय मान बैठे रहते हैं। उनका पराजय होकर राज्य, स्वातन्त्र्य और धन का सुख शत्रुओं के अधीन हो जाता है।"** महर्षि का सम्पूर्ण जीवन ही देशभक्ति का विशुद्ध अभियान था। इसी अभियान के अंतर्गत उन्होंने देशी राजाओं को प्राचीन राजनीति के द्वारा देशप्रेम के रंग में रंगना शुरू कर दिया था। राजस्थान में उदयपुर के महाराणा सज्जन सिंह, शाहपुराधीश और जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह और प्रतापसिंह को प्राचीन राजनीति के साथ प्रजा के प्रति उसके कर्त्तव्यों का ज्ञान भी कराया था। इस प्रकार उनका सारा जीवन राष्ट्र-यज्ञ की एक विनम्र आहुति बनकर रह गया। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम उस देश भक्त दयानन्द की राष्ट्रीय भावनाओं को हृदय में रखकर एक जन चेतना पैदा करें। ऐसा किये बिना न राष्ट्र सुरक्षित है और न वैदिक संस्कृति।

– *रामनिवास 'गुणग्राहक'*

बलिदान दिवस (31 जुलाई) पर विशेष

अमर शहीद ऊधम सिंह : जो चढ़ गए पुण्यवेदी पर...

– कविता वचक्नवी

प्रथम चित्र को ध्यान से देखिए – 'यह अमर शहीद ऊधम सिंह (26 दिसंबर 1899 – 31 जुलाई 1940) का चित्र है, जिनका आज बलिदान-दिवस है। जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड का बदला लेने के लिए 13 मार्च 1940 को उन्होंने 10 कैक्स्टन हाल में सभा के मध्य मंच पर स्थित पंजाब के तत्कालीन (जलियाँवाला बाग काण्ड के समय) गवर्नर Michael O'Dwyer को सिर में दो गोलियाँ मार कर उसकी हत्या कर दी थी व पुलिस उन्हें गिरफ्तार कर ले गई थी। अपनी गिरफ्तारी (और सुनिश्चित मृत्युदण्ड) के अवसर पर भी उनके चेहरे पर हँसी इस चित्र में साफ देखी जा सकती है जबकि तीन अंग्रेज अधिकारियों के मुख पर बहुत तनाव दीख रहा है।

लन्दन के न्यायालय में अपने वक्तव्य में न्यायाधीश द्वारा पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि 'मैंने उन्हें इसलिए मारा क्योंकि वे इसी योग्य थे और उनके साथ यही होना चाहिए था।' अतः 31 जुलाई 1940 को आज ही के दिन उन्हें लन्दन की Pentonville Prison में फाँसी दे दी गई। उसी जेल परिसर में उनका शव गाड़ दिया गया क्योंकि तब यहाँ भारतीय विधि से अन्तिम संस्कार की अनुमति नहीं थी। लम्बे अरसे बाद वर्ष 1974 में उनकी अस्थियाँ भारत लाई गईं। मेरे साथ यह सौभाग्य जुड़ा है कि वर्ष 1974 में जब उनकी अस्थियाँ भारत पहुँचीं थीं तब हमारे पिताजी मुझे व मेरे भाई को उनके दर्शन करवाने स्वयं ले गए थे। दूसरा सौभाग्य यह लन्दन में भारतीय क्रांतिकारियों व नायकों से जुड़े स्थलों के हमने स्वयं जाकर दर्शन किए हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सिंगापुर-बैंकॉक – 2014

सिंगापुर 1 -2 नवम्बर एवं बैंकाक 8 -9 नवम्बर 2014

सम्माननीय आर्यबन्धुओ!

आपको यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली** के तत्त्वावधान में इस वर्ष **अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सिंगापुर-थाईलैंड – 1 तथा 2 नवम्बर 2014 को सिंगापुर** में तथा **8 और 9 नवम्बर 2014 को थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक** में सम्पन्न होने जा रहा है। इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये अनेक देशों के प्रतिनिधि सिंगापुर तथा बैंकाक पहुँचेंगे। भारतवर्ष से भी इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु बड़ी संख्या में आर्यजन पहुँचेंगे। जो आर्यजन इस सम्मेलन में भाग लेना चाहते हैं वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के माध्यम से ही भाग ले सकेंगे। **सार्वदेशिक सभा के द्वारा स्वीकृत सदस्यों को ही सिंगापुर तथा थाईलैंड की प्रतिनिधि सभाएं अपने यहाँ प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार कर उनकी व्यवस्था करेंगी।** अनेकों आर्यजन इस अवसर पर दक्षिण पूर्व एशिया महाद्वीप का भ्रमण भी करना चाहते है, इसलिये उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए सिंगापुर तथा थाईलैंड के अत्यन्त रमणीय एवं महत्त्वपूर्ण स्थानों की यात्रा का भी रोचक कार्यक्रम बनाया गया है।

आवेदन पत्र www.thearyasamaj.org पर उपलब्ध है।

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल का राज्य स्तरीय महासम्मेलन आसनसोल में समारोह पूर्वक सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद केडिया तथा मंत्री श्री सतीश चन्द्र मंडल के नेतृत्व में आयोजित बंगाल के सम्पूर्ण आर्य समाजों का राज्य स्तरीय महासम्मेलन दिनांक 13 जुलाई 2014 को समारोह पूर्वक दयानन्द विद्यालय डी.ए.वी स्कूल रोड, बुधा, आसनसोल में सम्पन्न हुआ। समारोह का शुभारम्भ यज्ञ एवं ध्वजारोहण के साथ हुआ। ध्जारोहण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के उप प्रधान श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल ने किया। इस अवसर पर दीप प्रज्ज्वलन सार्वदेशिक के उप प्रधान श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल एवं मन्त्री श्री प्रकाश आर्य ने किया।

कार्यक्रम के इसी चरण में सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री सुरेश जी अग्रवाल, मंत्री श्री प्रकाश जी आर्य, केंद्रीय आर्य सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री धर्मपाल जी आर्य, बिहार, आर्य प्रतिनिधि सभा के श्री गंगा प्रसाद आर्य, झारखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आर्य भारत भूषण त्रिपाठी आदि ने आर्य समाज एवं वेद के प्रचार-प्रसार पर अपने सारगर्भित वक्तव्य रखे। इसमें बंगाल के दो सौ आर्य समाजों के सात सौ प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में आर्य समाज आसनसोल द्वारा स्थापित एवं संचालित डी.ए.वी. स्कूल, बुधा के प्रस्तावित ऑडिटोरियम तथा प्रशासनिक भवन का शिलान्यास बंगाल के श्रममंत्री माननीय श्री मलय घटक ने किया। इस प्रस्तावित निर्माण कार्य पर लगभग तीन करोड़ रुपये खर्च होंगे। इस अवसर पर आसनसोल नगर निगम के उपमहापौर श्री अमरनाथ चटर्जी, पुलिस कमिश्नर श्री विनीत कुमार गोयल, सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सुरेश जी अग्रवाल, मंत्री श्री प्रकाश जी आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री धर्मपाल जी आर्य, बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान गंगा प्रसाद जी आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा के झारखण्ड के प्रधान आर्य भारत भूषण त्रिपाठी, प्रचारक प. मधुसूदन शास्त्री, प. वेदप्रकाश शास्त्री विभिन्न आर्य समाजों से आये प्रतिनिधियों के अलावा नगर के गणमान्य व्यक्ति एवं कोलकाता बाजार आर्य समाज के श्री दीपक आर्य, सुरेश आर्य, बड़ा बाजार आर्य समाज के श्री रमेश अग्रवाल, श्री चाँद रतन दमानी, आर्य प्रतिनिधि सभा के उपाध्यक्ष श्री खुशहाल चन्द्र, भवानीपुर स्त्री आर्य समाज की श्रीमती अर्चना शास्त्री तथा आर्य समाज आसनसोल द्वारा संचालित तीनों विद्यालयों के प्रधानाध्यापक, शिक्षक-शिक्षिका व प्रबंधन समिति के सारे सदस्य मौजूद थे। इसी सत्र में आर्य प्रतिनिधि सभा की मासिक पत्रिका 'आर्य दर्पण' का विमोचन राज्य सरकार के श्रममन्त्री श्री मलय घटक ने किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पुलिस कमिश्नर श्री विनीत कुमार गोयल ने कहा कि मुझे इस बात का कतई अंदाजा नहीं था कि आसनसोल में आर्य समाज द्वारा संचालित ऐसे भी विद्यालय हैं जहाँ शत-प्रति-शत परीक्षा-परिणाम होते हैं। मंत्री श्री मलय घटक ने कहा कि आसनसोल में हिंदी भाषियों के शैक्षिक विकास में आर्य समाज द्वारा संचालित तीनों विद्यालयों का महत्वपूर्ण योगदान है। इस योगदान के लिए हिंदी भाषी सदा आर्य समाज के आभारी रहेंगे।

कार्यक्रम के तीसरे चरण में आर्य समाज के वक्ताओं ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि वैदिक धर्म का विकास एवं प्रसार होना चाहिए तथा सभी आर्यों का यह दायित्व है कि वे आर्य समाज के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएं।

कार्यक्रम के चौथे चरण में आर्य कन्या उच्च विद्यालय की छात्राओं ने आर्यसमाज के धार्मिक विषयों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जो सराहनीय रहा। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के मंत्री श्री प्रकाश आर्य ने पत्रकारों को आर्य समाज द्वारा किये जा रहे विकास एवं प्रचार-प्रसार के कार्यों की जानकारी दी।

सार्वदेशिक सभा अधिकारियों द्वारा आर्ष गुरुकुल नर्मदापुरम् होशंगाबाद (म.प्र.) का दौरा

गत दिनों सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों उप प्रधान श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, उपमन्त्री श्री विनय आर्य एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी द्वारा आर्ष गुरुकुल नर्मदापुरम् होशंगाबाद का निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर गुरुकुल परिवार के के साथ आचार्य ऋतस्पति जी एवं सभा अधिकारीगण।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में

तीन दिवसीय कार्यकर्त्ता गोष्ठी एवं साधारण सभा बैठक

29-30-31 अगस्त, 2014

सार्वदेशिक सभा के समस्त साधारण सभा के सदस्यों से अनुरोध है कि उपरोक्त तिथियों को अभी से नोट कर लें तथा अपनी सुविधा के लिए रेलवे आरक्षण आदि अभी से करा लेवें। 28 अगस्त को रात्रि में ही पहुंच जाएं 29 की प्रात:काल गोष्ठी आरम्भ हो जाएगी। प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से आने वाले नामों को ही भाग लेने की स्वीकृति दी जा सकेगी। कृपया अपने पहुंचने के कार्यक्रम की सूचना सभा कार्यालय को पत्र द्वारा अथवा ईमेल द्वारा अवश्य दें ताकि तद्नुसार उचित व्यवस्था की जा सके।

आचार्य बलदेव — प्रधान, सार्वदेशिक सभा
प्रकाश आर्य — मन्त्री, सार्वदेशिक सभा
डॉ. सुरेन्द्र कुमार — कुलपति, गु. कां. विवि.

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के उत्पादों पर
30% की विशेष छूट

आंवला कैंडी	आंवला कैंडी	च्यवनप्राश स्पेशल
(500 ग्राम) ~~160~~/-	(1किलो) ~~294~~/-	(1किलो) ~~286~~/-
110/-रु.	210/-रु.	200/-रु.

इसके अलावा सभी उत्पादों पर 10% की छूट। प्राप्त करने/अधिक जानकारी के लिए 9540040339 पर श्री विजय आर्य जी से सम्पर्क करें। - महामन्त्री

वैदिक शगुन लिफाफे
महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 400/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

पृष्ठ 3 का शेष

करने व वेद प्रचार को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए एक अनुसंधान पूर्ण, सामयिक तथा पाठकोपयोगी प्रचारात्मक लेखों का प्रकाशन भी वेदों के प्रचार प्रसार में सहायक है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ट्रस्ट ने सन् 1972 में ''दयानन्द संदेश'' नाम से एक मासिक पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया जो अद्याविधि पूर्ण सफलता के साथ जारी है और आज यह आर्य जगत की एक प्रमुख पत्रिका है। इस पत्रिका को आर्य जगत के प्रसिद्ध वेदों के मर्मज्ञ विद्वान पं. राजवीर शास्त्री ने सम्पादक के रूप में अपनी अवैतनिक सेवाएं देकर ट्रस्ट एवं पत्रिका को गौरवान्वित किया है। पं. राजवीर शास्त्री की विद्वता, सदाचार, शिष्टाचार, लेखन क्षमता की छाप सारे आर्य जगत में अंकित है। वह आर्य जगत के विद्वानों में अजातशत्रु के रूप में सम्मानित हैं। समय समय पत्रिका वैदिक विषयों पर गवेषणा, अनुसंधान एवं शोध से पूर्ण विशेषांको का प्रकाशन करती रही है जिनमें से कुछ जीवात्म-ज्योति विशषांक (3 भागों में), वैदिक मनोविज्ञान विशेषांक, सृष्टि संवत् विशेषांक, काल- अकाल मृत्यु विशेषांक, महर्षि दयानन्द के साहित्य की विषय सूची, अद्वैत व त्रैतवाद की मीमांसा, आर्य मान्यताएं, युगपुरूष योगेश्वर कृष्ण, मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम, योग मीमांसा, सत्यार्थ प्रकाश के संशोधनों की समीक्षा एवं सत्यार्थ प्रकाश के परोपकारिणी सभा के 37 वें संस्करण में पाठ परिवर्तन आदि पर प्रकाशित विशेषांक प्रमुख व महनीय कार्य है जिनकी आर्य समाज में आज भी मांग है। दयानन्द सन्देश मासिक पत्रिका द्वारा अपने 48 वर्षों के जीवन काल में सरिता व लोकालोक आदि में वेद विरूद्ध प्रकाशित होने वाले लेखों का सप्रमाण खण्डन भी किया जाता रहा है जिसके उत्तर विरोधियों के पास नहीं थे। यह विरोधी अपनी अज्ञान व स्वार्थ के कारण ही वेद विरोधी लेख व विचारों को प्रकाशित करते रहे हैं और बाद में निरूत्तर होने पर चुप हो जाते हैं। यही स्थिति महर्षि दयानन्द के प्रचार काल में भी विरोधी व अन्य मतों के आचार्यों की हुआ करती थी। सन् 1981 में लाला दीपचन्द आर्य की मृत्यु के पश्चात दयानन्द सन्देश पत्रिका उनके सुयोग्य पुत्र श्री धर्मपाल आर्य द्वारा निर्बाध रूप से समय पर प्रकाशित हो रही है जिससे सारा आर्य जगत लाभान्वित हो रहा है। श्री धर्मपाल आर्य, गुरूकुल पद्धति से संस्कृत आदि भाषा में दीक्षित आर्य जगत के सुयोग्य विद्वान, लेखक एवं नेता है। उन्होंने अपने पिता लाला दीपचन्द आर्य की यश व कीर्ति को स्थिर रखा है जिसके लिए वह प्रशंसा के पात्र हैं। लाला दीपचन्द आर्य की ही तरह आर्य जगत के विद्वान, आर्य व वैदिक साहित्य के प्रमुख प्रकाशक श्री गोविन्दराम हासानन्द, इनके सुपुत्र श्री विजय कुमार व इनके सुपुत्र श्री अजय कुमार आर्य भी हैं जिन्होंने अपने पूर्वजों का नाम उज्ज्वल रखते हुए आर्य समाज को जीवन्त रखने एवं वेदों के प्रचार व प्रसार में स्वयं को समर्पित किया हुआ है। हम लाला दीपचन्द आर्य, श्री गोविन्दराम, श्री विजय कुमार, श्री धर्मपाल आर्य व श्री अजय कुमार आर्य को आर्य जगत की वन्दनीय एवं ऐतिहासिक विभूतियां मानते हैं।

ट्रस्ट ने वेदों पर अनुसंधान के क्षेत्र में अनेक कार्य किए हैं। स्वामी दयानन्द के यजुर्वेद एवं ऋग्वेद भाष्य पर आर्य जगत के दो प्रसिद्ध विद्वानों पं. सुदर्शन देव आचार्य एवं पं. राजवीर शास्त्री से भाष्य-भास्कर नामक विस्तृत टीकाएं प्रकाशित की। विद्वत जगत में इन दोनों ग्रन्थों की भूरि-भूरि प्रशंसा हुई। इसके अतिरिक्त मनुस्मृति को कुछ लोगों ने एक विवादास्पद ग्रन्थ बना दिया गया है। यह ऐसे बुद्धिजीवी हैं जिन्होंने प्राय: मनुस्मृति को न पढ़ा ही है और न समझा है। मनुस्मृति वैदिक साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इस सम्बन्ध में यह सर्वमान्य तथ्य है कि मनुस्मृति सहित हमारे बाल्मिकी रामायण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रन्थों में कुछ स्वार्थी व लोभी लोगों ने समय-समय पर प्रक्षेप एवं परिवर्तन किए हैं जिससे इन ग्रन्थों का वास्तविक स्वरूप ही विकृत हो गया है। वर्तमान में उपलब्ध मनुस्मृति में ऐसे बहुत से प्रसंग हैं जो वेद विरुद्ध, प्रसंग विरुद्ध, अनावश्यक, गुण, कर्म, स्वभाव पर आधारित वर्णाश्रम व्यवस्था के विपरीत हैं। लाला दीपचन्द आर्य जी ने मनुस्मृति पर वैदिक साहित्य के अध्येता पं. राजवीर शास्त्री और डॉ. सुरेन्द्र कुमार द्वारा अनुसंधान कराकर ऐसे प्रक्षेपों का पता लगवाया और इस सम्पूर्ण शोध कार्य को मनुस्मृति के ही नाम से प्रकाशित किया। आपने प्रक्षेप रहित मनुस्मृति को विशुद्ध मनुस्मृति के नाम से भी प्रकाशित किया। इस विशुद्ध मनुस्मृति का पहला संस्करण पं. राजवीर शास्त्री के नाम से प्रकाशित किया गया था और बाद के संस्करण डॉ. सुरेन्द्र कुमार के नाम से प्रकाशित किए जा रहे हैं। यह वेद प्रेमियों का सौभाग्य है कि आपके प्रयासों से आज मनुस्मृति अपने शुद्ध स्वरूप में उपलब्ध है। इस विशालकाय ग्रन्थ मनुस्मृति के समीक्षा भाग सहित एवं विशुद्ध मनुस्मृति नाम से दो पृथक संस्करणों के कई बार संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। लालाजी की इस देन से सारा मानव समाज ऋणी रहेगा। कुछ वर्ष पूर्व जब जयपुर उच्च न्यायालय से कुछ व्यक्तियों द्वारा न्यायालय परिसर से मनु की मूर्ति को हटाने की मांग की और उसे हटाने का एक पक्षीय निर्णय लिया गया तो लालाजी के विद्वान सुपुत्र श्री धर्मपाल आर्य ने न्यायालय में एक याचिका प्रस्तुत कर स्थगनादेश प्राप्त किया। आपके इस प्रयास से महाराज मनु की यह मूर्ति अब भी न्यायालय परिसर में विद्यमान है। इससे जुड़े मुद्दो पर श्री धर्मपाल आर्य ने एक पुस्तिका का प्रकाशन भी किया है। वैदिक साहित्य के प्रचार हेतु लाला दीपचन्द आर्य ने एक वाहन खरीदा था जिसका नाम उन्होंने ''सत्यार्थ प्रकाश वाहन'' दिया। इस वाहन के लिए एक प्रचारक और ड्राइवर नियुक्त कर उन्हें सत्यार्थ प्रकाश एवं अन्य कुछ वैदिक साहित्य से भर कर देश के सभी भागों में प्रचारार्थ भेजा गया। यह वाहन जहां भी जाता, वहां भीड़भाड़ वाले क्षेत्र में भजन व उपदेशों से सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार करते और सस्ते मूल्य पर सत्यार्थ प्रकाश का वितरण करते। इससे महर्षि दयानन्द के प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश सहित अन्य ग्रन्थों का भी अपूर्व प्रचार हुआ। सन् 1969 में काशी में शास्त्रार्थ शताब्दी के अवसर पर आपने अपने व्यापक वैदिक ज्ञान से काशी के विद्वानों का स्वामी दयानन्द की मान्यताओं के विरुद्ध आक्षेपों का युक्तियुक्त समाधान किया जिससे उनके लोगों को आपके शास्त्रों के गहन स्वाध्याय एवं वैदुष्य का ज्ञान हुआ। इस शास्त्रार्थ में 'भागसाधनामिन्द्रयं' के आधार पर महर्षि दयानन्द द्वारा नाभि को इन्द्रिय मानने को आपने उचित सिद्ध किया था। यहां आपने किसी भी व्यक्ति द्वारा वेदों से मूर्ति पूजा सिद्ध करने पर बड़ी धनराशि पुरस्कार के रूप में देने की घोषणा की। दिल्ली में पौराणिक विद्वान श्री सुरेन्द्र शर्मा एंव आर्य विद्वान वेदव्रत मीमांसक के बीच सृष्टि सम्वत् विषय पर हुए शास्त्रार्थ के आप संयोजक थे।

लालाजी में अनेक विशेषताएं थी। उन्होंने कभी कहीं पर किसी विद्वान को अपने सम्मान अथवा प्रशंसा में कुछ कहने या लिखने का अवसर नहीं दिया। यदि कभी किसी विद्वान ने कहीं किसी लेख आदि में कुछ लिख दिया, उस लेख की आपकी प्रशंसा में लिखी गई पंक्तियों को आप निकलवा दिया करते थे तथा जो लेख दयानन्द संदेश में छपता था उसमें प्रशंसात्मक कोई पंक्ति नहीं होती थी। आपने अपने जीवन काल में अपनी पत्रिका दयानन्द सन्देश तथा आपके न्यास से प्रकाशित होने वाली पुस्तकों में कभी अपना चित्र नहीं छपने दिया। ज्ञान की पराकाष्ठा वैराग्य होती है और यह वैराग्य ही आपके जीवन व व्यक्तित्व में हम पाते हैं। इस व्यक्तित्त्व के कारण ही आर्य जगत के दो शिरोमणि विद्वान पं. राजवीर शास्त्री एवं पं. सुदर्शन देव आचार्य आपके साथ जुड़े रहे। इन विद्वानों का आपके साथ जुड़े रहना ही आपकी सफलता का एक मुख्य कारण रहा है। सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार में आपकी रूचि का एक प्रेरक उदाहरण तब मिला जब दिल्ली के एक व्यक्ति द्वारा दूरभाष पर आपसे पूछताछ की। इसके कुछ ही समय बाद आप इच्छित संख्या में सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियां अपनी गाड़ी में डालकर उसके पास पहुंच गए और अपने व्यवसाय की चिन्ता न कर काफी समय तक उससे बातें करते रहे। इन पंक्तियों के लेखक को जून, 1976 में आपने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने की प्रेरणा करते हुए अनेक महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए थे। हमें याद है कि आपने अपनी दुकान पर पहुंचने पर हमसे पूर्ण आत्मीयता से बातचीत करते हुए कहा था कि सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन दूसरे समुल्लास से करना और पहले समुल्लास को कुछ समुल्लास पढ़ने के बाद या दसवें समुल्लास के बाद पढ़ना। तब हमने यह अनुभव किया था कि इस ऋषि भक्त में अनेक दैवीय गुण हैं जो एक साधारण, सामान्य व अंकिचन व्यक्ति से भी इतनी आत्मीयता व स्नेहपूर्वक बातें करता है और उसे पूरा सम्मान देता है। आज हमने अपने जीवन में जो सफलताएं प्राप्त की हैं उनमें आपके साथ व्यतीत किए गए वह स्वर्णिम पल भी सम्मिलित हैं। इस प्रकार का आत्मीयता पूर्ण व्यवहार उसी दिन आपके घर पहुंचने पर आपकी धर्मपत्नी माता बालमति आर्या जी ने भी किया था। इन दिनों हम 24 वर्ष के युवक थे और आर्य समाज में नए थे। इसके अनेक वर्षो बाद माता बालमति आर्या जी से आर्य वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार में एक साथी सहित मिलने पर भी माताजी का व्यवहार अपनी माताजी के समान पाया था। आपने हमें प्रचुर मात्रा में बादाम, काजू, पिस्ते आदि खिलाए और जो बच गए थे उसे मना करने पर भी हमारी जेबों में भरवा दिया था जिसे हम रास्ते में खाते रहे थे। यह संस्मरण भी हमारे जीवन का एक स्वर्णिम संस्मरण बन गया है। ऐसा ही व्यवहार श्री धर्मपाल आर्य भी करते हैं।

लालाजी आर्य समाज का प्रचार बड़ी तेजी से कर रहे थे। सारा आर्य जगत आपकी ऋषि भक्ति पर मुग्ध था। महर्षि दयानन्द के आप ऐसे दीवाने थे जिसकी उपमा देने में हमें कठिनाई हो रही है। माता बालमति आर्या जी ने जून 1976 में एक संस्मरण सुनाते हुए बताया था कि लालाजी जब स्नान करने जाते हैं तो कुछ ही क्षणों, सेकण्ड्स या मिनटों में स्नान कर बाहर आ जाते हैं अर्थात् बहुत ही कम समय स्नान करने में लगाते हैं। ऐसा ही विद्वानों के साथ जब वह उनसे घर पर वार्तालाप कर रहे होते थे, तो उनका भोजन का समय निकल जाता था और वह विचार विनिमय में मग्न रहा करते थे। उनका निवास स्थान-2 एफ कमलानगर, दिल्ली आर्य जगत के प्रमुख व शीर्षस्थ विद्वानों का तीर्थ स्थल सा बन गया था जहां लालाजी से मिलने सभी पहुंचते थे और लालाजी सबका आतिथ्य व सत्कार भोजन व निवास आदि की सुविधा प्रदान कर करते थे। अपने गुरु स्वामी दयानन्द की तरह आपका जीवन लगभग 62 वर्ष का रहा। स्वामी दयानन्द जी का जीवन लगभग 59 वर्ष तक का ही रहा। इस अल्प कालावधि में आपने जो कार्य किए उनसे आपका स्थान वैदिक धर्म एवं आर्य समाज के इतिहास में अमर हो गया है। हम जब आपके जीवन की घटनाओं पर विचार करते हैं तो मन व आत्मा में एक विशेष स्फूर्ति उत्पन्न हो जाती है और कुछ रचनात्मक व सकारात्मक कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। 28 दिसम्बर सन् 1981 को रात्रि नौ बजे दिल्ली में पूर्व प्रारब्ध के अनुसार जाति, आयु व भोगों को पूरा कर आपने अपने जीवन व आत्मा का उत्सर्ग किया। आपकी मृत्यु पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान व आपके सहयोगी पं. राजवीर शास्त्री ने श्रद्धांजलि देते हुए आपको महात्मा दीपचन्द आर्य के नाम से स्मरण किया। वस्तुत: आप महात्मा ही थे जो अज्ञानी व अन्धविश्वासी लोगों को धार्मिक दृष्टि से वेदों के ज्ञान से सम्पत्तिशाली बनाने की अभिलाषा रखते थे और इसके लिए प्राणपण से तप कर रहे थे। आर्य जगत के एक अन्य प्रसिद्ध विद्वान पं. वीरसेन वेदश्रमी ने अपनी श्रद्धांजलि में आपको आर्य ग्रन्थों का दीवाना बताया। डॉ. भवानीलाल भारतीय ने लाला दीपचन्द आर्य की विनयशीलता, अतिथि सत्कार, गुण ग्राहकता एवं विद्वानों के सम्मान को आदर्श एवं अनुकरणीय बताया। जयपुर के डॉ. सत्यदेव आर्य के अनुसार लालाजी अत्यन्त सरल, सौम्य व स्नेहिल स्वभाव के पुण्यात्मा एवं वैदिक सिद्धांतों में अटूट आस्था रखने वाले सच्चे आर्य थे। आर्य जगत के शीर्षस्थ विद्वान पं. युधिष्ठिर मीमांसक ने अपनी श्रद्धांजलि में कहा कि लालाजी ने अपनी चंचला लक्ष्मी को श्री एवं यशस्वनी रूप में बदलने का जो सत्कार्य किया है उससे वह भी उन्हें सदा अमर रखेगी। हम इन सभी विद्वानों की सम्मति में अपनी सम्मति शामिल कर महात्मा दीपचन्द आर्य व उनकी धर्मपत्नी माता बालमति आर्या को अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। हम यह भी अनुभव करते हैं कि यदि लाला दीपचन्द आर्य कुछ वर्ष और जीवित रहते तो आर्य समाज व वैदिक धर्म की और अधिक सेवा करते। ऋग्वेद भाष्य भास्कर का कार्य पूरा कराते और आज यजुर्वेद भाष्य भास्कर सहित सभी ग्रन्थ भव्य साज सज्जा व शुद्ध मुद्रण के साथ आर्य पाठकों को सुलभ होते। अनेक नए अनुसंधानपूर्ण व उपयोगी ग्रन्थ भी अस्तित्व में आते जिनसे विश्व में वेदों का महत्त्व और अधिक व्यापक व प्रभावोत्पादक होता। उनके असमय परलोक गमन हो जाने से वैदिक धर्म, आर्य समाज, देश एवं मानवता की अपूरणीय क्षति हुई है।

-196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-1

आर्यसमाज पंखा रोड 'सी' ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली का
श्रावणी/वेद प्रचार पर्व

10 अगस्त से 17 अगस्त 2014

प्रवचन : आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय
भजन : श्री सहदेव बेधड़क
प्रभातफेरी : 7, 8, 9 अगस्त
हैदराबाद सत्याग्रह : 10 अगस्त
आर्य महिला सम्मेलन : 13 अगस्त
आर्यवीर/वीरांगना सम्मेलन : 16 अगस्त
जन्माष्टमी : 17 अगस्त

– अजय तनेजा, मन्त्री

आर्यसमाज हनुमान रोड का
वेद प्रचार समारोह

10 अगस्त से 18 अगस्त 2014

प्रवचन : आचार्य इन्द्रदेव जी
भजन : श्री राजवीर शास्त्री
ऋग्वेद पारायण यज्ञ : प्रातः 7:30 बजे
हैदराबाद सत्याग्रह : 17 अगस्त
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी : भाषण प्रतियोगिता
18 अगस्त : प्रातः 10:30 बजे
विषयः 'आर्य संस्कृति के संरक्षक योगिराज श्रीकृष्ण'

– दयानन्द यादव, मन्त्री

अथर्ववेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

२० से २४ जून २०१४ तक कुरवाई (विदिशा) में आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी के ब्रह्मत्व में अथर्ववेद पारायण यज्ञ संपन्न हुआ। ५९७७ मंत्रो की आहुति दी गई। आचार्य जी मंत्रो के बारे में व्याख्या करते थे। यज्ञ का आयोजन श्री राम मुनि जी के पुत्र श्री इन्द्रप्रकाश आर्य के घर पर हुआ।

–ओमप्रकाश आर्य,आ.स. कुरवाई

आर्यसमाज सम्भाजी नगर औरंगाबाद
भारत समृद्धि महायज्ञ

13 अगस्त से 17 अगस्त 2014
खडकेश्वर महादेव मन्दिर मैदान

यज्ञ : प्रतिदिन प्रातः 8:30 से 11 बजे
सायं : 4:30 से 7 बजे
ब्रह्मा : आचार्या नन्दिता शास्त्री
पूर्णाहुति : रविवार 17 अगस्त

– दयाराम बसैये, मन्त्री

अ.भा. संस्कृत साहित्य सम्मेलन
संस्कृत दिवस सम्मान समारोह

9 अगस्त, 2014 सायं 5 बजे

स्थान : संस्कृत भवन, कुतुब क्षेत्र
अरुणा आसफ अली मार्ग, न.दि.
मुख्य अतिथि : डॉ. कर्ण सिंह
अध्यक्ष : डा. मुकुन्दकाम शर्मा

– ओ. पी. सर्राफ, का. अध्यक्ष

दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा
संस्कृत दिवस समारोह

9 अगस्त, 2014 प्रातः 10 बजे

स्थान : रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल राजा बाजार, नई दिल्ली
मुख्य अतिथि : श्री वी.सी. पाण्डेय
अध्यक्ष : श्री शंकर सुहैल
मुख्य वक्ता : डॉ. सत्यपाल सिंह (सांसद)

– डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, सचिव

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्यसमाजों के लिए उपदेशक/भजनोपदेशक सेवा
आर्यसमाजें सभा की इस सेवा लाभ से उठाएं

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की सूचनार्थ है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार विभाग की ओर से दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के लिए उपदेशक/भजनोपदेशक भेजने का कार्य नियमित रूप से होता है। ऐसी समस्त आर्यसमाजें जहां उपदेशक/भजनोपदेशक नियमित रूप से नहीं आते हैं और वे विद्वानों को आमन्त्रित करना चाहते हैं। उनसे निवेदन है कि वे अपने साप्ताहिक सत्संगों पर उपदेशक आदि बुलाने के लिए सभा के अन्तर्गत संचालित वेद प्रचार विभाग के **सहायक अधिष्ठाता आचार्य ऋषिदेव आर्य जी से मो. 9540040388** पर सम्पर्क करें। आचार्य जी द्वारा आपकी आर्यसमाज/संस्थान के लिए आगामी छह मास के साप्ताहिक सत्संग निर्धारित किए जा सकेंगे।

–विनय आर्य, महामन्त्री (9958174441)

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु. प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु. प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.	प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज मालवीय नगर नई दिल्ली-17

प्रधान : श्री हरनारायण मिथरानी
मन्त्री : श्री सुभाष चन्द्र चांदना
कोषाध्यक्ष : श्री विनोद कद

आर्यसमाज मानसरोवर पार्क शाहदरा, दिल्ली-32

प्रधान : श्री जगदीश प्रसाद वर्मा
मन्त्री : श्री सन्दीप वेदालंकार
कोषाध्यक्ष : श्री फूलचन्द आर्य

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-1 नई दिल्ली-48

प्रधान : श्री इन्द्र सैन साहनी
मन्त्री : श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा
कोषाध्यक्ष : श्री प्रताप गुलयानी

आर्यसमाज प्रशान्त विहार रोहिणी, सै. 14, दिल्ली-85

प्रधान : श्री कृष्ण चन्द्र पाहूजा
मन्त्री : श्री सोहन लाल मुखी
कोषाध्यक्ष : श्री भूषण आहुजा

आर्यसमाज पंखा रोड, सी ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली-58

प्रधान : श्री शिव कुमार मदान
मन्त्री : श्री अजय तनेजा
कोषाध्यक्ष : श्री विजय कुमार गुलाटी

आर्यसमाज रावत भाटा कोटा (उ.प्र.)

प्रधान : श्री नरदेव आर्य
मन्त्री : श्री ओम प्रकाश आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री रमेशचन्द्र भाट

आर्यजन ध्यान दें

समस्त आर्य परिवारों से निवेदन है कि यदि आपके कोई सम्बन्धी/रिश्तेदार/परिचित या आर्य विचारधारा से प्रेरित कोई व्यक्ति भारत के अन्दमान-निकोबार, लक्ष्यद्वीप या गोवा में रहते हैं अथवा नौकरी करते हैं तो कृपया उनका नाम, पता, दूरभाष तथा ईमेल हमें भेजने की कृपा करें ताकि उनसे सम्पर्क करके यहां आर्यसमाज की स्थापना का प्रयास किया जा सके। *–मन्त्री, सार्वदेशिक सभा*

ईमेल : aryasabha@yahoo.com

प्रवेश सूचना

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के अन्तर्गत स्वामी दर्शनानन्द जूनियर हाई स्कूल कक्षा 6-8 तक, पूर्व मध्यमा एवं उत्तर मध्यमा में प्रवेश आरम्भ हैं। शिक्षा निःशुल्क है। आवासीय छात्रों से भोजन शुल्क, कम्प्यूटर शुल्क तथा प्रवेश शुल्क लिया जाता है। ऋतु अनुसार वस्त्र, बिस्तर, पुस्तकें, दूध-घी अदि का व्यय पृथक से लिया जाता है। अधिक जानकारी के लिए प्रधानाचार्य जी से सम्पर्क करें– 09319030270, 09219406074

शोक समाचार

ब्र. राजसिंह आर्य को बहनोई शोक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी के बड़े बहनोई श्री नाहर सिंह वर्मा जी का दिनांक 25 जुलाई, 2014 को निधन हो गया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से नाहरपुर रोहिणी स्थिति श्मशानघाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में 27 जुलाई, 2014 को आर्यसमाज सै-7, रोहिणी में एवं श्रद्धांजलि सभा आयोजित हुई जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ आस-पास की अनेक आर्य संस्थाओं के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

आचार्य गिरिराज किशोर का निधन

विश्व हिन्दू परिषद के वरिष्ठ नेता व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक आचार्य गिरिराज किशोर जी का 95 वर्ष की आयु में गत 13 जुलाई को दिल्ली में निधन हो गया।

वे श्रीराम जन्मभूमि सहित अनेक सामाजिक आंदोलनों से जुड़े थे। उनके संकल्पानुसार, उनकी दोनों आँखें तथा शेष पूरा शरीर आर्मी मेडीकल कॉलेज को दान कर दिया गया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा 25 जुलाई को लोधी रोड स्थित चिन्मय मिशन ऑडिटोरियम में सम्पन्न हुई।

श्री मनोहर लाल आर्य का निधन

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर के वरिष्ठ सदस्य एवं वर्तमान मन्त्री श्री महेशचन्द्र के जी अग्रज श्री मनोहर लाल आर्य जी का 80 वर्ष की अवस्था में गत दिनों निधन हो गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। –सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 4 अगस्त, 2014 से रविवार 10 अगस्त, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 7/8 अगस्त, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 6 अगस्त, 2014

दिल्ली सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध
श्रावणी पर्व पर वितरणार्थ लघु साहित्य

आपको विदित ही है कि आर्यसमाज द्वारा प्रतिवर्ष रक्षाबन्धन से जन्माष्टमी तक श्रावणी पर्व आयोजित किया जाता है। श्रावणी पर्व विशेष तौर पर स्वाध्याय के पर्व के रूप में जाना जाता है।

इस वर्ष **रक्षा बन्धन (रविवार) 10 अगस्त, 2014** को तथा **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (सोमवार) 18 अगस्त, 2014** को है। दोनों पर्वों के बीच का सप्ताह आर्यसमाजों द्वारा वेद प्रचार समारोह के रूप में मनाया जाता है।

सभा की ओर से जन साधारण को आर्यसमाज के कार्य, उद्देश्य, इतिहास, मान्यताएं, धार्मिक विश्वास, नियम, महर्षि दयानन्द, वेद, एवं वैदिक संस्कृति के ज्ञान को सरलता–सुगमता से पहुंचाने के लिए कुछ विशेष सामग्री तैयार की है जो कि इस अवसर पर विशेष रूप से युवाओं तथा नव आगन्तुकों को बांटी जा सकती है। इनमें –

एक निमन्त्रण : जन साधारण को आर्यसमाज की विशेषताएं? इतिहास एवं वर्तमान बताते हुए आर्यसमाज से जुड़ने की प्रेरणा हैं (**मूल्य 10/–**)

मानव निर्माण के स्वर्णिम सूत्र : आर्य समाज के मन्तव्यों का ज्ञान: (**मूल्य 3/–**)

लघु सत्यार्थ प्रकाश : बच्चों हेतु सरल भाषा में सत्यार्थ प्रकाश (**मूल्य 10/–**)।

नियमानुसार छूट उपलब्ध

अधिक जानकारी के लिए श्री विजय आर्य 9540040339 से सम्पर्क करें।

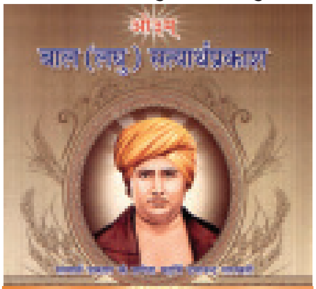

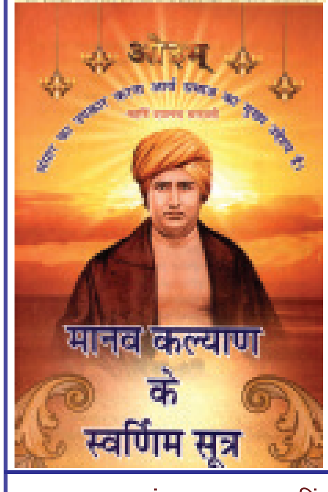

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जम्मू–कश्मीर आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से सार्वजनिक स्थलों पर साहित्य प्रचार

श्रीनगर पुस्तक मेला

स्थान : प्रदर्शनी मैदान, कश्मीर हाट, श्रीनगर (ज.क.)

23 से 31 अगस्त, 2014 : प्रातः 11 बजे

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करें तथा अधिकाधिक संख्या में जन सामान्य को पुस्तक मेले में सभा के साहित्य प्रचार स्टाल पर पहुंचने के लिए प्रेरित करें।

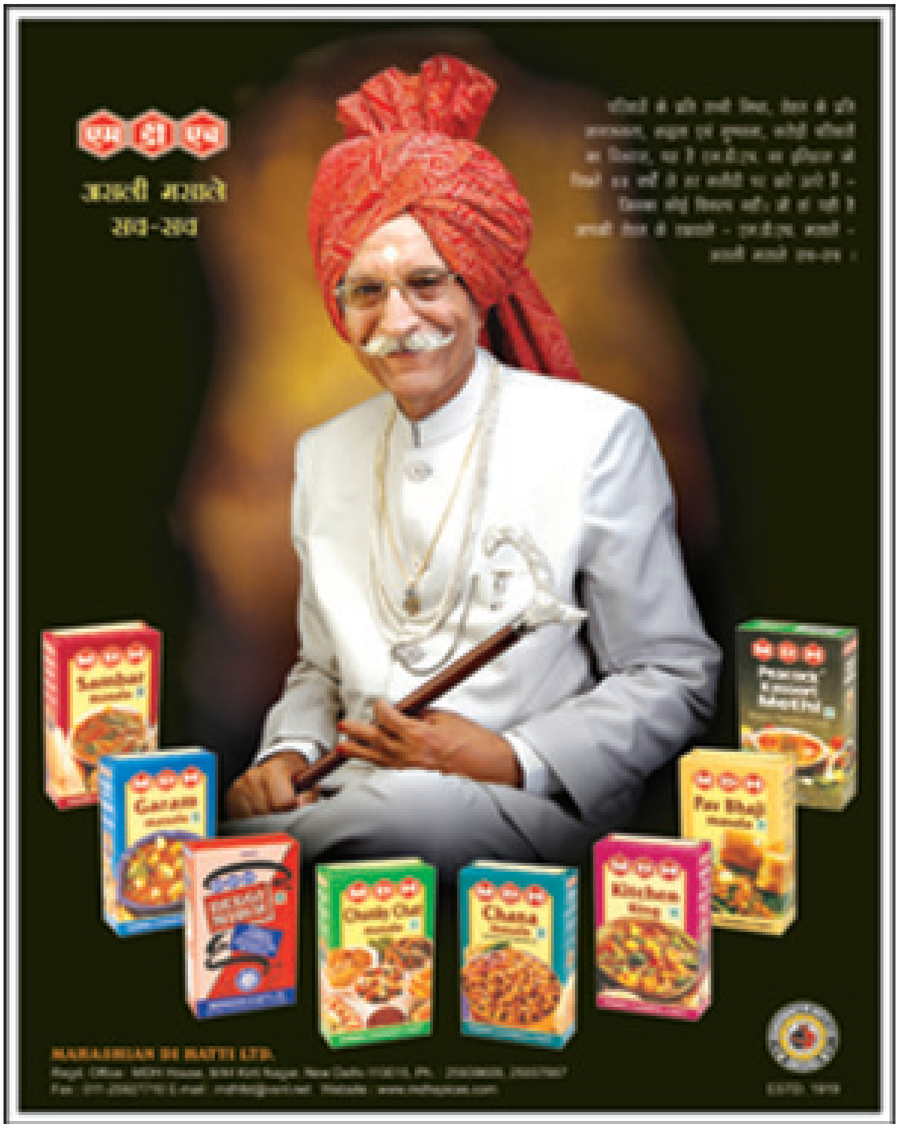

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य   सह सम्पादक : विनय आर्य   व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान   सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह